5 छात्र राजनीति से राष्ट्रीय नेतृत्व तक का सफर

6 मूलभूत सुविधाओं के लिए भटक रहे विस्थापित परिवार

7 बच्चों को सिर्फ व्यस्त कर रहे हैं या सफल भी बना रहे हैं?


RNI-MPBIL/2011/39805 DAVP/134083/25

निष्पक्ष और निर्भीक साप्ताहिक

# जगत प्रवाह

वर्ष : 17 अंक : 05 प्रति सोमवार, 08 जून 2026 मूल्य : दो रुपये पृष्ठ : 8


# ट्विषा शर्मा हत्याकांडः क्या मध्यप्रदेश की कानून व्यवस्था बेटियों को न्याय दिलाने में हो रही विफल?

## हाई प्रोफाइल मामला बना तो जांच हुई, वरना कितनी ट्विषा गुमनाम रह जातीं

कवर स्टोरी



-विजया पाठक
एडिटर

मध्यप्रदेश में चर्चित ट्विषा शर्मा प्रकरण ने न केवल एक परिवार को झंकझोर दिया है, बल्कि प्रदेश की कानून व्यवस्था, महिलाओं की सुरक्षा और न्यायिक प्रक्रिया की निष्पक्षता पर भी गंभीर प्रश्नचिह्न खड़े कर दिए हैं। मॉडल-एक्टर रही ट्विषा शर्मा की संदिग्ध परिस्थितियों में भोपाल स्थित ससुराल में मृत्यु ने पूरे देश का ध्यान अपनी ओर खींचा। इस मामले में स्थानीय जांच पर सवाल उठे, परिजनों ने प्रभावशाली लोगों द्वारा मामले को दबाने के आरोप





लगाए और अंततः जांच को CBI को सौंपना पड़ा। आज सबसे बड़ा सवाल यह है कि यदि यह मामला इतना चर्चित और हाई-प्रोफाइल न होता, तो क्या ट्विषा के परिवार को न्याय की उम्मीद होती? क्या प्रदेश में ऐसी अनेक बेटियां और बहुएं नहीं हैं, जिनकी मौतें, उत्पीड़न और शिकायतें प्रशासनिक फाइलों में दबकर रह जाती हैं? ट्विषा शर्मा प्रकरण केवल एक परिवार की त्रासदी नहीं है, यह मध्यप्रदेश में महिलाओं की सुरक्षा व्यवस्था की वास्तविक स्थिति को सामने लाने वाला मामला बन चुका है। यदि एक चर्चित मामले में भी निष्पक्ष जांच सुनिश्चित कराने के लिए परिवार को इतना संघर्ष करना पड़ता है, तो उन हजारों महिलाओं की स्थिति का सहज अनुमान लगाया जा सकता है जिनकी आवाज सत्ता और व्यवस्था तक पहुंच ही नहीं पाती। (शेष पेज 2 पर)

### साय सरकार का ढाई साल का कार्यकाल

# छत्तीसगढ़ में विकास की नई इबारत लिखती साय सरकार

-विजया पाठक

छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी की सरकार के गठन के बाद मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में राज्य में विकास और जनकल्याण को केंद्र में रखकर कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं। दिसंबर 2023 में मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के बाद से विष्णुदेव साय सरकार ने किसानों, महिलाओं, युवाओं, आदिवासी समुदाय और बुनियादी ढांचे के विकास से जुड़े अनेक कदम उठाए हैं। सरकार का दावा है कि उसने अपने चुनावी वादों को पूरा करने की दिशा में तेजी से कार्य किया है, जबकि विपक्ष इन दावों की समीक्षा और आलोचना भी करता रहा है। इसके बावजूद यह तथ्य सामने आता है कि सरकार ने अपने शुरुआती कार्यकाल में कई बड़े फैसलों के माध्यम से प्रशासनिक सक्रियता का परिचय दिया है।

#### किसानों के लिए प्राथमिकता

विष्णुदेव साय सरकार ने सत्ता संभालते ही किसानों से जुड़े मुद्दों को प्राथमिकता दी। भाजपा ने विधानसभा चुनाव के दौरान किसानों से किए गए वादों को पूरा करने का भरोसा दिया था। सरकार ने धान खरीदी और किसानों को आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने की दिशा में कदम बढ़ाए। किसानों को कृषि कार्यों के लिए बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने, सिंचाई परियोजनाओं को गति देने तथा कृषि उत्पादन बढ़ाने के प्रयास किए गए हैं। (शेष पेज 2 पर)

### क्या पार्टी की छवि को नुकसान पहुंचा रहे हैं भाजपा नेताओं के विवादित बयान?

# जीतू पटवारी पर मुख्यमंत्री के दिये बयान से मचा सियासी बवाल

-विजया पाठक

लोकतांत्रिक राजनीति केवल चुनाव जीतने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह विचार, संवाद और मर्यादा की भी परीक्षा होती है। राजनीतिक दलों की पहचान केवल उनकी नीतियों और उपलब्धियों से नहीं बनती, बल्कि उनके नेताओं की भाषा, व्यवहार और सार्वजनिक आचरण से भी




निर्मित होती है। यही कारण है कि जब किसी बड़े दल के नेता विवादित या आक्रामक बयान देते हैं, तो उसका प्रभाव केवल व्यक्तिगत छवि तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पूरे संगठन पर पड़ता है। मध्यप्रदेश की राजनीति में पिछले कुछ समय से नेताओं की बयानबाजी लगातार चर्चा का विषय बनी हुई है। (शेष पेज 3 पर)

विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) पर विशेष

# विकास के नाम पर चढ़ाई जा रही पेड़ों की बलि

-विजया पाठक

भारत में लगातार वनों की संख्या घट रही है, जो एक गंभीर पर्यावरणीय चुनौती के रूप में उभर कर सामने आ रही है। विकास के नाम पर हर साल करोड़ों पेड़ों की बलि चढ़ाई जा रही है। आंकड़ों के अनुसार प्रत्येक वर्ष 18 करोड़ से अधिक पेड़ों को इसलिए काटा जा रहा है क्योंकि यह विकास में बाधक माने जाते हैं। लेकिन सही मायने में यह पेड़ों की कटाई नहीं बल्कि मानव जाति की सांसों की हत्या है। वन मानव जीवन और पृथ्वी के अस्तित्व के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। भारत में वनों की लगातार घटती संख्या पर्यावरण, अर्थव्यवस्था और समाज के लिए गंभीर चुनौती बन चुकी है। यदि समय रहते प्रभावी कदम नहीं उठाए गए, तो आने वाली पीढ़ियों को जलवायु परिवर्तन, जल संकट, जैव विविधता के विनाश और प्राकृतिक आपदाओं जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। इसलिए वन संरक्षण को राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाना आवश्यक है। सतत विकास तभी संभव है जब विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित किया जाए। (शेष पेज 3 पर)

# कब रुकेगा बेटियों का कत्ल? ट्विषा हत्याकांड ने खोली व्यवस्था की पोल

(पेज 1 का शेष)

### ट्विषा शर्मा मामला क्यों बना कानून व्यवस्था पर बड़ा सवाल?

ट्विषा शर्मा की मृत्यु के बाद उनके परिवार ने दहेज प्रताड़ना, मानसिक उत्पीड़न और निष्पक्ष जांच न होने के आरोप लगाए। मामले में स्थानीय पुलिस की कार्यप्रणाली पर लगातार प्रश्न उठे। सीबीआई द्वारा घटनास्थल का पुनर्निर्माण, आरोपियों से पूछताछ और साक्ष्यों की पुनः जांच की जा रही है। मामले में पूर्व न्यायिक अधिकारी और उनके परिवार का नाम सामने आने से यह बहस और तेज हुई कि क्या प्रभावशाली लोगों के मामलों में जांच एजेंसियां समान निष्पक्षता से काम कर पाती हैं। ट्विषा के पिता लगातार यह कह रहे हैं कि उनकी बेटी आत्महत्या जैसा कदम नहीं उठा सकती थी और दोषियों को कठोर सजा मिलनी चाहिए।

ट्विषा शर्मा प्रकरण केवल एक परिवार की त्रासदी नहीं है, यह मध्यप्रदेश में महिलाओं की सुरक्षा व्यवस्था की वास्तविक स्थिति को सामने लाने वाला मामला बन चुका है। यदि एक चर्चित मामले में भी निष्पक्ष जांच सुनिश्चित कराने के लिए परिवार को इतना संघर्ष करना पड़ता है, तो उन हजारों महिलाओं की स्थिति का सहज अनुमान लगाया जा सकता है जिनकी आवाज सत्ता और व्यवस्था तक पहुंच ही नहीं पाती।

### अनुसूचित जाति एवं जनजाति महिलाओं की स्थिति और गंभीर

2022 से 2024 के बीच अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग की 7,418 महिलाओं के साथ बलात्कार हुए। 338 सामूहिक बलात्कार के मामले सामने आए। 558 महिलाओं की हत्या हुई। इन समुदायों की महिलाओं के खिलाफ अपराधों की संख्या लगातार हजारों में बनी रही। ये आंकड़े बताते हैं कि महिलाओं के विरुद्ध अपराध केवल शहरी या उच्चवर्गीय समस्या नहीं हैं, बल्कि समाज के कमजोर वर्गों की महिलाएं कहीं अधिक असुरक्षित हैं।

### हाई-प्रोफाइल मामलों को ही क्यों मिलता है न्याय?

ट्विषा शर्मा मामला राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बना क्योंकि पीड़िता का परिवार लगातार संघर्ष करता रहा। मीडिया ने मामले को प्रमुखता से उठाया। सोशल मीडिया पर व्यापक जनसमर्थन मिला। न्यायालय की निगरानी में जांच आगे बढ़ी। लेकिन प्रश्न यह है कि जिन परिवारों के पास संसाधन नहीं हैं, जो मीडिया तक नहीं पहुंच सकते, जिनकी आवाज सोशल मीडिया पर नहीं सुनी जाती, उनका क्या होता है? ग्रामीण क्षेत्रों में दहेज हत्या, घरेलू हिंसा, संदिग्ध मौतें और महिलाओं के गायब होने के अनेक मामले कभी राष्ट्रीय चर्चा का विषय नहीं बनते। अक्सर पीड़ित परिवार वर्षों तक थानों, अदालतों और सरकारी कार्यालयों के चक्कर काटते रहते हैं।

### मध्यप्रदेश का चिंताजनक रिकॉर्ड

मध्यप्रदेश लंबे समय से महिलाओं के खिलाफ अपराधों के मामले में देश के शीर्ष राज्यों में शामिल रहा है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़े बताते हैं कि राज्य में महिलाओं के विरुद्ध अपराध लगातार चिंता का विषय बने हुए हैं। वर्ष 2023 में मध्यप्रदेश में महिलाओं के खिलाफ 32,342 अपराध दर्ज हुए। राज्य में 2,979 बलात्कार के मामले सामने आए, जो देश में सर्वाधिक मामलों वाले राज्यों में शामिल हैं। इनमें लगभग 99 प्रतिशत मामलों में आरोपी पीड़िता के परिचित या रिश्तेदार थे। राज्य में 7,577 मामले पति या ससुराल पक्ष द्वारा क्रूरता के दर्ज हुए। 468 दहेज मृत्यु के मामले दर्ज हुए। 5,078 महिलाओं की अस्मिता पर हमला करने के मामले सामने आए। ये आंकड़े बताते हैं कि महिलाओं के लिए सबसे बड़ा खतरा अक्सर घर और परिचित वातावरण के भीतर से ही पैदा हो रहा है। विधानसभा में प्रस्तुत आंकड़ों के अनुसार जनवरी 2024 से जून 2025 के बीच 21,175 महिलाएं लापता हुईं। 1,954 नाबालिग लड़कियां गायब हुईं। 10,840 बलात्कार के मामले दर्ज हुए। हजारों महिलाएं घरेलू हिंसा, उत्पीड़न और यौन अपराधों की शिकार बनीं। औसतन प्रतिदिन 28 महिलाएं और 3 लड़कियां गायब हो रही थीं। यह स्थिति केवल कानून व्यवस्था की चुनौती नहीं, बल्कि सामाजिक सुरक्षा तंत्र की भी विफलता को दर्शाती है।

### मोहन सरकार के सामने बड़ी चुनौती

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व वाली सरकार के सामने महिलाओं की सुरक्षा सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। सरकार ने विभिन्न योजनाएं और सुरक्षा अभियान शुरू किए हैं, लेकिन जमीन पर अपराधों के आंकड़े चिंता पैदा करते हैं। आवश्यक है कि महिलाओं से जुड़े अपराधों की जांच के लिए विशेष तंत्र विकसित हो। दहेज और घरेलू हिंसा के मामलों की निगरानी मजबूत की जाए। फास्ट ट्रैक अदालतों की संख्या बढ़ाई जाए। पुलिस जवाबदेही सुनिश्चित की जाए। पीड़ित परिवारों को कानूनी सहायता उपलब्ध कराई जाए। प्रभावशाली आरोपियों के मामलों में स्वतंत्र जांच की व्यवस्था हो।

# किसान, युवा और आदिवासी केंद्र में साय सरकार की प्राथमिकताएं और उपलब्धियां

(पेज 1 का शेष)

राज्य सरकार का मानना है कि छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था का बड़ा हिस्सा कृषि पर आधारित है। इसलिए ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत किए बिना समग्र विकास संभव नहीं है। कृषि क्षेत्र में तकनीक के उपयोग और किसानों की आय बढ़ाने के लिए भी योजनाएं संचालित की जा रही हैं।

### महिलाओं के सशक्तिकरण पर जोर

महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण को सरकार ने अपनी प्राथमिकताओं में शामिल किया है। महिला स्व-सहायता समूहों को प्रोत्साहित करने, स्वरोजगार के अवसर बढ़ाने तथा विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाने के लिए विशेष प्रयास किए गए हैं। सरकार का दावा है कि महिला समूहों को वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की आर्थिक भागीदारी बढ़ाने के उद्देश्य से कई कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है।

### युवाओं के लिए रोजगार और कौशल विकास

राज्य के युवाओं के लिए रोजगार सृजन सरकार की प्रमुख प्राथमिकताओं में शामिल है। कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं को रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण देने का प्रयास किया जा रहा है। विभिन्न विभागों में रिक्त पदों पर भर्ती प्रक्रिया शुरू करने तथा निवेश को आकर्षित कर रोजगार के नए अवसर पैदा करने की दिशा में भी पहल की गई है। सरकार का कहना है कि औद्योगिक विकास और निवेश को बढ़ावा देकर युवाओं के लिए दीर्घकालिक रोजगार के अवसर तैयार किए जाएंगे। इसके लिए निवेशकों को अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

### आदिवासी विकास पर विशेष फोकस

विष्णुदेव साय स्वयं आदिवासी समाज से आते हैं, इसलिए उनके नेतृत्व में आदिवासी क्षेत्रों के विकास को विशेष महत्व दिया जा रहा है। राज्य के दूरस्थ और वनांचल क्षेत्रों में सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य और पेयजल जैसी बुनियादी सुविधाओं का विस्तार करने के प्रयास किए गए हैं। आदिवासी युवाओं की शिक्षा और कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए भी योजनाएं संचालित की जा रही हैं। सरकार का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि विकास की मुख्यधारा से दूर रहे समुदायों को भी समान अवसर प्राप्त हों।

### बुनियादी ढांचे के विकास को गति

राज्य सरकार ने सड़क, पुल, भवन और अन्य आधारभूत संरचनाओं के निर्माण को गति देने का प्रयास किया है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में संपर्क सुविधाओं को मजबूत बनाने के लिए विभिन्न परियोजनाओं पर कार्य किया जा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि किसी भी राज्य के आर्थिक विकास के लिए मजबूत आधारभूत संरचना आवश्यक होती है। इसी दृष्टिकोण से सरकार परिवहन, ऊर्जा और नगरीय विकास के क्षेत्र में निवेश बढ़ाने पर जोर दे रही है।

### कानून-व्यवस्था और प्रशासनिक सुधार

सरकार ने कानून-व्यवस्था को मजबूत बनाने और प्रशासनिक प्रक्रियाओं में पारदर्शिता लाने के लिए भी कई कदम उठाए हैं। भ्रष्टाचार पर नियंत्रण और सरकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन को लेकर प्रशासन को सक्रिय रहने के निर्देश दिए गए हैं। राज्य सरकार का दावा है कि जनता की शिकायतों के त्वरित समाधान और जवाबदेह प्रशासन की दिशा में कार्य किया जा रहा है। डिजिटल माध्यमों के उपयोग से सेवाओं को अधिक सुलभ बनाने का प्रयास भी किया गया है।

### नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में विकास की पहल

छत्तीसगढ़ लंबे समय से नक्सल समस्या से प्रभावित रहा है। विष्णुदेव साय सरकार ने सुरक्षा उपायों के साथ-साथ विकास आधारित दृष्टिकोण अपनाने पर जोर दिया है। नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार से जुड़ी सुविधाओं का विस्तार करने का प्रयास किया जा रहा है। सरकार का मानना है कि विकास और विश्वास के माध्यम से ही प्रभावित क्षेत्रों को मुख्यधारा से जोड़ा जा सकता है। इसी उद्देश्य से कई योजनाओं का संचालन किया जा रहा है।

### स्वास्थ्य और शिक्षा क्षेत्र में प्रयास

स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत बनाने के लिए अस्पतालों में सुविधाओं का विस्तार, चिकित्सा उपकरणों की उपलब्धता और स्वास्थ्य कर्मियों की नियुक्ति पर ध्यान दिया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच बढ़ाने के लिए भी प्रयास जारी हैं। शिक्षा के क्षेत्र में विद्यालयों के उन्नयन, डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने और विद्यार्थियों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने पर जोर दिया जा रहा है। सरकार का उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को राज्य के प्रत्येक बच्चे तक पहुंचाना है।

### निवेश और औद्योगिक विकास

छत्तीसगढ़ को औद्योगिक निवेश का प्रमुख केंद्र बनाने की दिशा में भी सरकार सक्रिय दिखाई दे रही है। उद्योगों के लिए अनुकूल नीतियां, निवेशकों के साथ संवाद और नई परियोजनाओं को प्रोत्साहन देने के प्रयास किए जा रहे हैं। राज्य के खनिज संसाधनों और भौगोलिक स्थिति को देखते हुए उद्योग क्षेत्र में विकास की व्यापक संभावनाएं हैं। सरकार इन्हीं संभावनाओं को वास्तविक निवेश और रोजगार में बदलने की दिशा में काम कर रही है।

### विपक्ष की आलोचना भी जारी

जहां सरकार अपने कार्यों और उपलब्धियों को जनता के सामने रख रही है, वहीं विपक्ष कई मुद्दों पर सवाल उठा रहा है। विपक्ष का कहना है कि कुछ वादों को पूरी तरह लागू करने में अभी समय लगेगा और कई क्षेत्रों में अपेक्षित परिणाम सामने नहीं आए हैं। हालांकि राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि किसी भी सरकार के प्रदर्शन का अंतिम मूल्यांकन उसके पूरे कार्यकाल के आधार पर ही किया जाना चाहिए। फिलहाल सरकार और विपक्ष दोनों अपनी-अपनी दलीलों के साथ जनता के बीच सक्रिय हैं।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार ने अपने शुरुआती कार्यकाल में किसानों, महिलाओं, युवाओं, आदिवासियों और आधारभूत संरचना के विकास को प्राथमिकता देने का प्रयास किया है। जनकल्याणकारी योजनाओं, प्रशासनिक सुधारों और विकास परियोजनाओं के माध्यम से सरकार राज्य के समग्र विकास का दावा कर रही है। आने वाले वर्षों में इन योजनाओं और नीतियों के वास्तविक परिणाम राज्य की सामाजिक और आर्थिक स्थिति पर किस प्रकार प्रभाव डालते हैं, यह देखने योग्य होगा। फिलहाल इतना स्पष्ट है कि विष्णुदेव साय सरकार ने अपने कार्यकाल की शुरुआत सक्रिय निर्णयों और विकासोन्मुख दृष्टिकोण के साथ की है, जिससे छत्तीसगढ़ की राजनीति और प्रशासन में नई दिशा देने का प्रयास दिखाई देता है।

# क्या नेताओं की बयानबाजी मध्यप्रदेश भाजपा के लिए बन रही है चुनौती?

(पेज 1 का शेष)

सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच तीखे राजनीतिक हमले कोई नई बात नहीं हैं, लेकिन जब राजनीतिक आलोचना व्यक्तिगत टिप्पणी का रूप लेने लगती है, तब लोकतांत्रिक संवाद की गरिमा पर प्रश्नचिह्न खड़े होने लगते हैं।

### कई प्रमुख बीजेपी नेता दे चुके विवादित बयान

हाल के वर्षों में भाजपा के कई नेताओं के बयान राजनीतिक विवादों का कारण बने हैं। मंत्री विजय शाह, राकेश शुक्ला, विधायक प्रीतम सिंह लोधी, अमरीश शर्मा के बयानों से विपक्ष ने लगातार भाजपा को घेरा है। अब मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी को लेकर हुई बयानबाजी भी राजनीतिक चर्चा के केंद्र में है। विपक्ष का आरोप है कि इस प्रकार की टिप्पणियां राजनीतिक शिष्टाचार के अनुरूप नहीं हैं, जबकि भाजपा इन्हें राजनीतिक प्रतिक्रिया का हिस्सा बताती है।

### भाषा का स्तर और लोकतंत्र

लोकतंत्र में विरोध और आलोचना स्वाभाविक है। राजनीतिक दल एक-दूसरे की नीतियों, निर्णयों और कार्यशैली की आलोचना करते हैं। लेकिन जब बहस मुद्दों से हटकर व्यक्तियों पर केंद्रित हो जाती है, तब राजनीति का स्तर प्रभावित होता है। जनता अपने नेताओं से यह अपेक्षा करती है कि वे सार्वजनिक जीवन में संयमित और मर्यादित भाषा का प्रयोग करें। भारतीय राजनीति का इतिहास बताता है कि वैचारिक मतभेदों के बावजूद बड़े नेताओं ने संवाद की मर्यादा बनाए रखने का प्रयास किया। संसद और विधानसभाओं में तीखी बहसें होती थीं, लेकिन व्यक्तिगत कटाक्ष अपेक्षाकृत कम देखने को मिलते थे। वर्तमान दौर में सोशल मीडिया और 24 घंटे के समाचार चक्र ने राजनीतिक प्रतिक्रियाओं को अधिक तात्कालिक और आक्रामक बना दिया है।

### भाजपा की संगठनात्मक संस्कृति और चुनौती

बीजेपी लंबे समय से स्वयं को अनुशासित कैडर आधारित संगठन के रूप में प्रस्तुत करती रही है। पार्टी की सबसे बड़ी ताकत उसका संगठन और कार्यकर्ताओं का अनुशासन माना जाता है। यही कारण है कि जब किसी भाजपा नेता का बयान विवाद का विषय बनता है, तो विपक्ष इसे पार्टी की घोषित संस्कृति से जोड़कर प्रश्न उठाता है। भाजपा के लिए चुनौती यह है कि वह अपने नेताओं के व्यक्तिगत बयानों और संगठन की आधिकारिक सोच के बीच स्पष्ट अंतर बनाए रखे। यदि विवादित बयान लगातार सुर्खियों में बने रहते हैं तो इससे पार्टी की विकास, सुशासन और जनकल्याण आधारित राजनीतिक कथा कमजोर पड़ सकती है।

### विपक्ष को मिलता है अवसर

राजनीति में हर विवाद विपक्ष के लिए अवसर बन जाता है। जब सत्ता पक्ष का कोई नेता विवादास्पद बयान देता है, तो विपक्ष उसे सरकार की प्राथमिकताओं और मानसिकता से जोड़कर प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। मध्यप्रदेश में कांग्रेस भी यही रणनीति अपनाती रही है। विपक्ष का तर्क है कि सरकार को जनता के मुद्दों पर ध्यान देना चाहिए, न कि व्यक्तिगत टिप्पणियों पर। हालांकि यह भी सच है कि केवल बयानबाजी के आधार पर किसी दल की राजनीतिक स्थिति तय नहीं होती। अंततः जनता सरकार के कामकाज, योजनाओं और परिणामों के आधार पर निर्णय करती है। फिर भी बार-बार होने वाले विवाद राजनीतिक माहौल को प्रभावित अवश्य करते हैं।

### सोशल मीडिया का प्रभाव

आज एक बयान कुछ ही मिनटों में पूरे देश में चर्चा का विषय बन जाता है। सोशल मीडिया के दौर में नेताओं के शब्द पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं। कोई भी टिप्पणी वीडियो क्लिप, पोस्ट या संदेश के रूप में लाखों लोगों तक पहुंच जाती है। ऐसे में नेताओं को पहले की तुलना में अधिक सावधानी बरतने की आवश्यकता है। राजनीतिक दलों को भी अपने प्रतिनिधियों के लिए संवाद और सार्वजनिक संचार की स्पष्ट आचार संहिता विकसित करनी चाहिए। इससे अनावश्यक विवादों से बचा जा सकता है और जनता का ध्यान वास्तविक मुद्दों पर केंद्रित रखा जा सकता है।

### क्या संगठन को सख्ती दिखानी चाहिए?

यह प्रश्न बार-बार उठता है कि क्या राजनीतिक दलों को विवादित बयान देने वाले नेताओं के खिलाफ अधिक सख्त रुख अपनाना चाहिए। लोकतांत्रिक दलों में विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता होती है, लेकिन सार्वजनिक पदों पर बैठे लोगों से जिम्मेदार व्यवहार की अपेक्षा भी की जाती है। यदि कोई बयान लगातार विवाद पैदा कर रहा है और उससे संगठन की छवि प्रभावित हो रही है, तो पार्टी नेतृत्व को कम से कम यह स्पष्ट संदेश देना चाहिए कि व्यक्तिगत टिप्पणियों की जगह मुद्दा आधारित राजनीति को प्राथमिकता दी जाए। इससे राजनीतिक संवाद का स्तर भी बेहतर होगा और संगठन की सार्वजनिक छवि भी मजबूत होगी।

मध्यप्रदेश की राजनीति इस समय विकास, निवेश, रोजगार, कृषि और बुनियादी ढांचे जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों के दौर से गुजर रही है। जनता की अपेक्षा है कि राजनीतिक दल इन विषयों पर गंभीर बहस करें। विवादित बयान अल्पकालिक राजनीतिक लाभ दे सकते हैं, लेकिन दीर्घकाल में वे लोकतांत्रिक संवाद की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। भाजपा हो या कांग्रेस, किसी भी दल की वास्तविक ताकत उसके नेताओं की भाषा में नहीं, बल्कि जनता के प्रति उसकी जवाबदेही में होती है। राजनीतिक मर्यादा, संयम और मुद्दा आधारित संवाद ही लोकतंत्र को मजबूत बनाते हैं। इसलिए सभी दलों के नेता शब्दों की शक्ति और उनकी जिम्मेदारी को समझें तथा ऐसी राजनीति को बढ़ावा दें जो लोकतांत्रिक मूल्यों को सशक्त करे, न कि उन्हें कमजोर।

# भारत में हर साल काटे जा रहे 18 करोड़ पेड़

(पेज 1 का शेष)

रोपण, जन-जागरूकता और कठोर संरक्षण नीतियों के माध्यम से हम अपने वनों को सुरक्षित रख सकते हैं तथा एक हरित और समृद्ध भारत का निर्माण कर सकते हैं। भारत का कुल वन क्षेत्र लगभग 7,13,789 वर्ग किलोमीटर है। यह भारत के कुल भू-भाग का लगभग 21–22% हिस्सा है। सघन वन लगभग 40%, खुले वन लगभग 60% है। भारत जैसे विकासशील देश में वनों का महत्व और भी अधिक है, क्योंकि यहाँ बड़ी आबादी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से वन संसाधनों पर निर्भर है। इसके बावजूद देश में लगातार वन क्षेत्र पर दबाव बढ़ रहा है, जिससे वन संपदा को गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया है। पिछले 30 वर्षों में प्राकृतिक वनों की सघनता घट रही है, जबकि नए वृक्षारोपण मुख्यतः सड़क किनारे, बंजर भूमि और खुले वनों में हो रहे हैं। अवैध कटाई, औद्योगिकीकरण और कृषि विस्तार के कारण वनों का वास्तविक जैव विविधता वाला क्षेत्र लगातार कम हो रहा है।

### भारत में वनों की स्थिति चिंताजनक

भारत विश्व के उन देशों में शामिल है जहाँ जैव विविधता अत्यंत समृद्ध है। देश में उष्णकटिबंधीय वर्षावनों से लेकर शुष्क पर्णपाती वनों तक विभिन्न प्रकार के वन पाए जाते हैं। हालांकि सरकारी प्रयासों के कारण कुछ क्षेत्रों में वृक्षावरण बढ़ा है, फिर भी प्राकृतिक वनों का क्षरण और उनकी गुणवत्ता में गिरावट एक बड़ी चिंता का विषय है। बढ़ती जनसंख्या, औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के कारण वन क्षेत्रों पर निरंतर दबाव बढ़ता जा रहा है।

### उदयोगपतियों ने छलनी किये जंगल

देश के तमाम बड़े-बड़े उदयोगपतियों को देश के जंगलों को छलनी करने का बीड़ा उठाया है। उदयोगपति द्वारा कोयला, लौह अयस्क, बॉक्साइट तथा अन्य खनिजों के उत्खनन के लिए वन क्षेत्रों में खनन कार्य किया जा रहा है। अरावली पर्वत,

हसदेव के जंगल, सिंगरौली के जंगल जैसे ऐसे कई वन क्षेत्र हैं जहां लाखों हरे-भरे पेड़ों को नष्ट किया जा रहा है। हजारों एकड़ के जंगल के जंगल मलवे में तब्दील हो गये। खनन न केवल पेड़ों को नष्ट करता है बल्कि भूमि, जल और जैव विविधता को भी गंभीर क्षति पहुँचाता है। खासकर आदिवासी संस्कृति, सभ्यता और आजीविका तक को बर्बाद कर रहे हैं।

### औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, सड़क-रेल नेटवर्क बना विनाश का कारण

देश में औद्योगिक विकास और नगरीकरण की गति तेज हुई है। नए उद्योगों, कारखानों, आवासीय कॉलोनियों और व्यावसायिक परिसरों के निर्माण के लिए वन भूमि का उपयोग किया जाता है। विशेषकर सड़क-रेल नेटवर्क के निर्माण के कारण प्रत्येक वर्ष भारत में करोड़ों पेड़ों का काटा जा रहा है। विकास परियोजनाओं के नाम पर बड़ी मात्रा में पेड़ों की कटाई की जाती है। कहने को तो बड़े ही सुंदर तरीके से प्रचारित किया जाता है कि देश बदल रहा है, देश विकास कर रहा है लेकिन इसके पीछे के कहानी किसी को नहीं बताई जाती है।

### जनसंख्या वृद्धि और भूमि की बढ़ती मांग

भारत की जनसंख्या निरंतर बढ़ रही है। बढ़ती आबादी को आवास, सड़क, विद्यालय, अस्पताल और अन्य बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए बड़े पैमाने पर भूमि की आवश्यकता होती है। इसके परिणामस्वरूप वन क्षेत्रों को काटकर मानव बस्तियों में परिवर्तित किया जा रहा है। लकड़ी की बढ़ती मांग के कारण कई क्षेत्रों में अवैध रूप से पेड़ों की कटाई की जाती है।

### वनों की कमी के दुष्परिणाम

**जैव विविधता का ह्रासः** वनों के नष्ट होने से अनेक पशु-पक्षियों और वनस्पतियों के प्राकृतिक आवास समाप्त हो जाते हैं। परिणामस्वरूप कई प्रजातियाँ विलुप्ति के कगार पर पहुँच जाती हैं। जैव विविधता का नुकसान पारिस्थितिक संतुलन के लिए गंभीर खतरा है।

**जल संकटः** वन जल चक्र को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे वर्षा के जल को भूमि में समाहित करने में सहायता करते हैं। वनों के नष्ट होने से भूजल स्तर गिरता है और जल स्रोत सूखने लगते हैं, जिससे जल संकट उत्पन्न होता है।

**प्राकृतिक आपदाओं में वृद्धिः** वनों की कमी के कारण बाढ़, भूस्खलन, सूखा तथा चक्रवात जैसी प्राकृतिक आपदाओं की तीव्रता बढ़ सकती है। पर्वतीय क्षेत्रों में वनों की कटाई विशेष रूप से भूस्खलन की घटनाओं को बढ़ावा देती है।

**आदिवासी समुदायों पर प्रभावः** भारत के अनेक आदिवासी समुदाय अपनी आजीविका के लिए वनों पर निर्भर हैं। वन क्षेत्र घटने से उनकी आजीविका, संस्कृति और जीवनशैली प्रभावित होती है। इससे सामाजिक और आर्थिक समस्याएँ भी उत्पन्न होती हैं।

### सरकार के होने चाहिए दायित्व

विकास के नाम पर सरकार पेड़ों का जो विनाश कर रही है उसके भी अपने दायित्व होने चाहिए। योजनाएं बनाई जानी चाहिए जो प्रकृति को नुकसान न पहुंचाएं। हमारा मानना है कि विकास जरूरी है लेकिन विकास, विनाश करके नहीं किया जा सकता है। पर्यावरण संरक्षण की जो सरकार और गैर सरकारी संस्थाएं हैं उनका काम केवल निगरानी करना भर नहीं है बल्कि नुकसानदायक योजनाओं को रोकना भी है। क्योंकि प्रकृति ही वह अनमोल धरोहर है जिसके कारण मानव जाति का अस्तित्व है। इसका संरक्षण करना समाज और सरकार दोनों का कर्तव्य है।

## सम्पादकीय

# भारतीय राजनीति का वर्तमान परिदृश्यः चुनौतियाँ, अवसर और लोकतंत्र की दिशा

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है, जहाँ राजनीति केवल सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, विकास और जनहित की नीतियों को लागू करने का प्रमुख साधन भी है। वर्तमान समय में भारतीय राजनीति अनेक महत्वपूर्ण बदलावों और चुनौतियों के दौर से गुजर रही है। एक ओर देश तेजी से आर्थिक विकास, डिजिटल क्रांति और वैश्विक मंच पर बढ़ती प्रतिष्ठा का अनुभव कर रहा है, वहीं दूसरी ओर राजनीतिक ध्रुवीकरण, चुनावी प्रतिस्पर्धा और सामाजिक मुद्दों पर बढ़ती बहसें लोकतांत्रिक व्यवस्था को नई दिशा दे रही हैं। वर्तमान भारतीय राजनीति में सत्तारूढ़ दल और विपक्ष के बीच तीव्र प्रतिस्पर्धा देखने को मिल रही है। सरकार अपनी उपलब्धियों, विकास योजनाओं और राष्ट्रीय हितों से जुड़े मुद्दों को जनता के सामने रख रही है, जबकि विपक्ष सरकार की नीतियों की समीक्षा करते हुए जनता से जुड़े प्रश्नों को उठाने का प्रयास कर रहा है। लोकतंत्र में यह प्रतिस्पर्धा आवश्यक है, क्योंकि इससे सत्ता और विपक्ष दोनों जवाबदेह बने रहते हैं। हालांकि, कई बार यह प्रतिस्पर्धा स्वस्थ विमर्श के बजाय आरोप-प्रत्यारोप तक सीमित हो जाती है, जिससे जनहित के महत्वपूर्ण मुद्दे पीछे छूट जाते हैं। आज भारतीय राजनीति में युवाओं की भूमिका लगातार बढ़ रही है। बड़ी संख्या में युवा मतदाता लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी कर रहे हैं और रोजगार, शिक्षा, तकनीकी विकास तथा उद्यमिता जैसे मुद्दों को प्राथमिकता दे रहे हैं। राजनीतिक दल भी अब युवाओं को आकर्षित करने के लिए सोशल मीडिया, डिजिटल अभियान और नई नीतियों का सहारा ले रहे हैं। यह परिवर्तन लोकतंत्र के लिए सकारात्मक संकेत है, क्योंकि युवा वर्ग देश की भविष्य की दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सोशल मीडिया ने राजनीति की प्रकृति को काफी हद तक बदल दिया है। पहले राजनीतिक संदेशों का प्रसार मुख्यतः जनसभाओं और पारंपरिक मीडिया के माध्यम से होता था, लेकिन अब कुछ ही मिनटों में कोई भी राजनीतिक मुद्दा पूरे देश में चर्चा का विषय बन सकता है। इससे राजनीतिक जागरूकता बढ़ी है, परंतु इसके साथ ही गलत सूचनाओं और भ्रामक प्रचार की समस्या भी सामने आई है। इसलिए नागरिकों के लिए यह आवश्यक हो गया है कि वे किसी भी जानकारी को सत्यापित करने के बाद ही उस पर विश्वास करें।

हाल के वर्षों में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। संसद और विधानसभाओं में महिलाओं की संख्या बढ़ाने की दिशा में किए गए प्रयास भारतीय लोकतंत्र को अधिक समावेशी बनाने की ओर संकेत करते हैं। महिलाओं की सक्रिय भागीदारी से नीति-निर्माण में नए दृष्टिकोण और सामाजिक संवेदनशीलता का समावेश होता है। फिर भी भारतीय राजनीति के सामने कुछ गंभीर चुनौतियाँ मौजूद हैं। राजनीतिक संवाद का स्तर, चुनावी खर्च, भ्रष्टाचार के आरोप, सामाजिक विभाजन और बढ़ती राजनीतिक कटुता ऐसे विषय हैं जिन पर गंभीर चिंतन की आवश्यकता है। लोकतंत्र की सफलता केवल चुनावों से नहीं, बल्कि स्वस्थ संवाद, पारदर्शिता और संवैधानिक मूल्यों के सम्मान से सुनिश्चित होती है। अंततः, भारतीय राजनीति एक परिवर्तनशील दौर से गुजर रही है। देश के सामने विकास और लोकतंत्र को साथ लेकर आगे बढ़ने की चुनौती है। राजनीतिक दलों, जनप्रतिनिधियों और नागरिकों सभी की जिम्मेदारी है कि वे लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत करें तथा राष्ट्रहित को दलगत हितों से ऊपर रखें। यदि राजनीति जनसेवा, जवाबदेही और विकास के मूल उद्देश्यों पर केंद्रित रहे, तो भारत न केवल आर्थिक बल्कि लोकतांत्रिक दृष्टि से भी विश्व के लिए एक आदर्श उदाहरण बन सकता है।

## सियासी गहमागहमी

### मप्र भाजपा ने घोषित राज्यसभा उम्मीदवार ने शुरू किया अंतर्विरोध

मध्यप्रदेश में भाजपा द्वारा राज्यसभा उम्मीदवारों की घोषणा के बाद पार्टी के भीतर अंतर्विरोध और असंतोष की चर्चाएँ तेज हो गई हैं। राज्यसभा चुनाव सामान्यतः संगठनात्मक निर्णय माने जाते हैं, लेकिन जब उम्मीदवार चयन में स्थानीय नेताओं, कार्यकर्ताओं या क्षेत्रीय संतुलन की अपेक्षाओं की अनदेखी महसूस होती है, तब आंतरिक मतभेद सामने आने लगते हैं। भाजपा लंबे समय से अनुशासित संगठन होने का दावा करती रही है, किंतु राज्यसभा उम्मीदवारों के चयन को लेकर उठ रही प्रतिक्रियाएँ संकेत देती हैं कि पार्टी के भीतर भी विभिन्न समूहों और नेताओं की अपनी-अपनी अपेक्षाएँ हैं। कुछ नेताओं और कार्यकर्ताओं का मानना है कि लंबे समय से संगठन के लिए कार्य कर रहे लोगों को प्राथमिकता मिलनी चाहिए थी, जबकि पार्टी नेतृत्व ने अपने राजनीतिक और रणनीतिक समीकरणों को ध्यान में रखकर निर्णय लिया है। राजनीतिक दृष्टि से यह स्थिति भाजपा के लिए चुनौती और अवसर दोनों है। चुनौती इसलिए कि असंतोष यदि बढ़ता है तो संगठनात्मक एकता प्रभावित हो सकती है। वहीं अवसर इसलिए कि नेतृत्व संवाद और समन्वय के माध्यम से कार्यकर्ताओं का विश्वास पुनः मजबूत कर सकता है।

### मध्यप्रदेश कांग्रेस में उच्च स्तर पर बदलाव की तैयारी शुरू

मध्यप्रदेश कांग्रेस में उच्च स्तर पर संभावित बदलावों की चर्चा ने राजनीतिक गलियारों में हलचल बढ़ा दी है। लोकसभा चुनाव और हाल के राजनीतिक घटनाक्रमों के बाद पार्टी नेतृत्व संगठन को अधिक सक्रिय, प्रभावी और चुनावी दृष्टि से मजबूत बनाने की दिशा में कदम बढ़ाता दिखाई दे रहा है। ऐसे संकेत मिल रहे हैं कि प्रदेश संगठन में नई जिम्मेदारियों और नेतृत्व संरचना को लेकर गंभीर मंथन चल रहा है। कांग्रेस लंबे समय से मध्यप्रदेश में अपनी राजनीतिक स्थिति को मजबूत करने के प्रयास में जुटी है। ऐसे में संगठनात्मक बदलावों को आगामी चुनावों की तैयारी और कार्यकर्ताओं में नई ऊर्जा भरने की रणनीति के रूप में देखा जा रहा है। पार्टी नेतृत्व यह मानता है कि बदलते राजनीतिक परिदृश्य में संगठन को नई चुनौतियों के अनुरूप ढालना आवश्यक है। हालांकि, किसी भी बड़े बदलाव के साथ संतुलन बनाए रखना भी महत्वपूर्ण होता है। अनुभवी नेताओं की भूमिका, युवा चेहरों को अवसर और विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिनिधित्व जैसे मुद्दों पर विशेष ध्यान देना होगा। यदि बदलाव सोच-समझकर और संगठनात्मक सहमति के साथ किए जाते हैं, तो इससे कांग्रेस को राजनीतिक लाभ मिल सकता है। कुल मिलाकर, मध्यप्रदेश कांग्रेस में संभावित बदलाव केवल पदों का फेरबदल नहीं, बल्कि संगठन को नई दिशा देने की कोशिश के रूप में देखे जा रहे हैं।

## हफ्ते का कार्टून

## ट्वीट-ट्वीट

आकांक्षा के पिता किसान है। बेटी के डॉक्टर बनने के सपने के लिए किसान क्रेडिट कार्ड पर 3 लाख का कर्ज लिया। और नागपुर में खुद कुक की नौकरी कर ली, ताकि बेटी वहाँ coaching कर सके। फिर NEET पेपर लीक हुआ। परीक्षा रद्द हुई। उस अनिश्चितता में आकांक्षा हमें छोड़ कर चली गई। आकांक्षा की मौत आत्महत्या नहीं- मोदी जी की एक भ्रष्ट, टूटी हुई व्यवस्था की देन है।

-राहुल गांधी

कांग्रेस नेता @RahulGandhi

भाजपा के कुशासन में मध्य प्रदेश भ्रष्टाचार और घूसखोरी का ऐसा गढ़ बन गया है, जहाँ भ्रष्टाचार की जाँच करने वाली संस्थाएं खुद ही भ्रष्ट हो गई हैं। एमपी लोकायुक्त विभाग के कई अफसरों का रिश्वत लेकर मामलों को रफा दफा करना और आरोपियों को बचाना स्पष्ट बताता है कि पूरा तंत्र ऊपर से नीचे तक भ्रष्टाचार की चपेट में है।

-कमलनाथ

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष

@OfficeOfKNath

## राजवीरों की बात

# मीनाक्षी नटराजन: छात्र राजनीति से राष्ट्रीय नेतृत्व तक का प्रेरणादायक सफर

समता पाठक/जगत प्रवाह

मीनाक्षी नटराजन भारतीय राजनीति की उन प्रमुख महिला नेताओं में से एक हैं जिन्होंने अपने संगठनात्मक कौशल, सादगी और समर्पण के बल पर राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई। वे कांग्रेस की वरिष्ठ नेता हैं और मध्य प्रदेश की राजनीति के साथ-साथ राष्ट्रीय राजनीति में भी सक्रिय भूमिका निभाती रही हैं। उन्हें कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी की करीबी सहयोगियों में गिना जाता है। मीनाक्षी नटराजन का जन्म 23 जुलाई 1973 को मध्य प्रदेश के नागदा (उज्जैन जिले) में हुआ था। उनके पिता ए.आर. नटराजन और माता उमा नटराजन थे। प्रारंभिक शिक्षा के बाद उन्होंने इंदौर से उच्च शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने जैव रसायन (बायोकेमिस्ट्री) में एम.एससी. तथा कानून (एल.एल.बी.) की डिग्री हासिल की। छात्र जीवन से ही उनकी रुचि सामाजिक कार्यों और राजनीति में थी, जिसके कारण वे युवावस्था में ही कांग्रेस की छात्र राजनीति से जुड़ गईं।

मीनाक्षी नटराजन ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत कांग्रेस के छात्र संगठन (एनएसयूआई) से की। उनकी संगठन क्षमता और नेतृत्व कौशल के कारण वे तेजी से आगे बढ़ीं। वर्ष 1999 से 2002 तक वे एनएसयूआई की राष्ट्रीय अध्यक्ष रहीं। इसके बाद वर्ष 2002 से 2005 तक उन्होंने मध्य प्रदेश युवा कांग्रेस की अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। युवा कार्यकर्ताओं के बीच उनकी लोकप्रियता और सक्रियता ने उन्हें कांग्रेस संगठन में विशेष पहचान दिलाई।

वर्ष 2008 में उन्हें अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) में सचिव बनाया गया। इसके बाद वर्ष 2009 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने उन्हें मध्य प्रदेश की मंदसौर लोकसभा सीट से उम्मीदवार बनाया। यह सीट लंबे समय से कांग्रेस के लिए चुनौतीपूर्ण मानी जाती थी। मीनाक्षी नटराजन ने चुनाव में शानदार प्रदर्शन करते हुए भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार को हराकर जीत दर्ज की और 15वीं लोकसभा की सदस्य बनीं। उनकी यह जीत कांग्रेस के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी गई क्योंकि इस क्षेत्र में लंबे समय बाद पार्टी को सफलता मिली थी।

सांसद के रूप में उन्होंने महिला सशक्तिकरण, ग्रामीण विकास, शिक्षा तथा किसानों से जुड़े मुद्दों को प्रमुखता से उठाया। वे संसद की विभिन्न समितियों में भी सदस्य रहीं, जिनमें कार्मिक, लोक शिकायत एवं विधि-न्याय समिति तथा महिला सशक्तिकरण समिति शामिल थीं। उनके कार्यकाल के दौरान क्षेत्रीय विकास और जनसमस्याओं के समाधान पर विशेष ध्यान दिया गया।

वर्ष 2014 और 2019 के लोकसभा चुनावों में उन्होंने मंदसौर से पुनः चुनाव लड़ा, लेकिन सफलता प्राप्त नहीं कर सकीं। इसके बावजूद उन्होंने पार्टी संगठन में सक्रिय भूमिका निभाना जारी रखा। वे चुनावी राजनीति के साथ-साथ संगठन निर्माण और कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने के कार्यों में भी लगातार लगी रहीं। मीनाक्षी नटराजन को कांग्रेस की विचारधारा के प्रति निष्ठावान और सादगीपूर्ण जीवन शैली अपनाने वाली नेता माना जाता है। राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार वे उन नेताओं में शामिल हैं जिन्होंने परिवारवाद के बजाय संगठनात्मक कार्यों के माध्यम से अपनी पहचान बनाई। कांग्रेस नेतृत्व ने समय-समय पर उन्हें महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ सौंपी हैं। वर्ष 2023 में उन्हें कांग्रेस कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी) में भी स्थान दिया गया, जो पार्टी की सर्वोच्च निर्णय लेने वाली संस्था है।

वर्ष 2025 में कांग्रेस नेतृत्व ने उन्हें तेलंगाना कांग्रेस का एआईसीसी प्रभारी नियुक्त किया। इस नियुक्ति को उनकी संगठनात्मक क्षमता और अनुभव का सम्मान माना गया। पार्टी के भीतर उन्हें एक ईमानदार, अनुशासित और समर्पित नेता के रूप में देखा जाता है। राजनीति के अतिरिक्त मीनाक्षी नटराजन साहित्य और लेखन में भी रुचि रखती हैं। उन्होंने कुछ पुस्तकों का लेखन भी किया है। उनका जीवन युवाओं, विशेषकर महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है, क्योंकि उन्होंने कठिन परिश्रम, संगठनात्मक कार्य और जनसेवा के माध्यम से राष्ट्रीय राजनीति में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। मीनाक्षी नटराजन भारतीय राजनीति की एक सशक्त, शिक्षित और समर्पित महिला नेता हैं, जिन्होंने छात्र राजनीति से लेकर संसद और राष्ट्रीय संगठन तक का सफर अपनी मेहनत और नेतृत्व क्षमता के बल पर तय किया है। उनका राजनीतिक जीवन जनसेवा, संगठन निर्माण और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता का उदाहरण प्रस्तुत करता है।

# वित्तमंत्री ओपी चौधरी ने किया विकास कार्यों का निरीक्षण

-शशि पांडे

जगत प्रवाह. रायपुर। छत्तीसगढ़ के वित्तमंत्री ओपी चौधरी ने रायगढ़ शहर का दौरा कर वहां संचालित विभिन्न विकास कार्यों का कड़ा निरीक्षण किया और परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने सिंदूर पार्क, मिनी स्टेडियम, पंचतत्व गार्डन, जूटमिल हाउसिंग बोर्ड, मिट्ठूमुड़ा सामुदायिक भवन और फरहामुड़ा तालाब जैसी कई महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा परियोजनाओं का बारीकी से अवलोकन किया। निरीक्षण के दौरान वित्त मंत्री चौधरी ने अधिकारियों से निर्माण कार्यों की वर्तमान स्थिति, गुणवत्ता मानकों और समयसीमा की विस्तृत जानकारी ली। उन्होंने अधिकारियों को सख्त लहजे में निर्देशित किया कि सभी निर्माण कार्य उच्च गुणवत्ता के साथ तय समय के भीतर पूरे किए जाएं, ताकि आम जनता को इन नागरिक सुविधाओं का लाभ जल्द से जल्द मिल सके। चौधरी ने कहा कि राज्य सरकार रायगढ़ के समग्र और सुनियोजित विकास के लिए प्रतिबद्ध है। शहर में बनाए जा रहे पार्क, खेल परिसर, सामुदायिक भवन और जल संरक्षण परियोजनाएं न केवल नागरिकों का जीवन स्तर सुधारेंगी, बल्कि रायगढ़ को एक आधुनिक, स्वच्छ और सुविधा संपन्न शहर के रूप में नई पहचान देंगी। उन्होंने स्पष्ट किया कि सरकार का मुख्य लक्ष्य विकास कार्यों की गुणवत्ता से बिना कोई समझौता किए जनता को बेहतर से बेहतर बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराना है। इस निरीक्षण के दौरान विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे, जिन्होंने वित्त मंत्री को जारी परियोजनाओं की तकनीकी और व्यावहारिक प्रगति से अवगत कराया।

# CM ने लिया चारधाम यात्रा प्रक्रिया का जायजा

-प्रमोद कुमार

जगत प्रवाह. देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने ऋषिकेश स्थित ट्रांजिट कैंप का औचक निरीक्षण कर चारधाम यात्रा एवं रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया से संबंधित व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने यात्रियों के पंजीकरण, स्वास्थ्य जांच, ठहरने की व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया। मुख्यमंत्री ने बड़ी संख्या में अन्य राज्यों से आए श्रद्धालुओं से यात्रा का फीडबैक भी लिया। मुख्यमंत्री ने ट्रांजिट कैंप में श्रद्धालुओं के लिए की गई पंजीकरण व्यवस्था की जानकारी ली। उन्होंने कहा यह सुनिश्चित किया जाए की श्रद्धालुओं को रजिस्ट्रेशन के लिए इंतजार ना करना पड़े। उन्होंने स्वास्थ्य जांच केंद्रों का निरीक्षण कर यात्रियों के स्वास्थ्य का भी विशेष ध्यान देने को बात कही। निरीक्षण के दौरान मुख्यमंत्री ने श्रद्धालुओं के ठहरने की व्यवस्थाओं का भी अवलोकन किया। बढ़ती गर्मी को देखते हुए उन्होंने ट्रांजिट कैंप में अतिरिक्त कुलर लगाने तथा पेयजल एवं अन्य आवश्यक सुविधाओं को पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को बेहतर भीड़ प्रबंधन सुनिश्चित करने के निर्देश देते हुए कहा कि चारधाम यात्रा में आने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा एवं सुविधा सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने ट्रांजिट कैंप में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों से भी संवाद किया। उन्होंने सभी कर्मचारियों को अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखने की सलाह देते हुए कहा कि चारधाम यात्रा में आने वाले श्रद्धालुओं का "अतिथि देवो भवः" की भावना के साथ स्वागत करें तथा उनकी समस्याओं का त्वरित समाधान सुनिश्चित करें।

ट्रांजिट कैंप में धार्मिक एवं सांस्कृतिक वातावरण की भी सराहनाः ट्रांजिट कैंप में श्रद्धालुओं के लिए एलईडी स्क्रीन के माध्यम से रामायण एवं महाभारत के प्रसारण की विशेष व्यवस्था की गई है। यात्रियों ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि इससे प्रतीक्षा के दौरान उन्हें आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक वातावरण का अनुभव हो रहा है।

## उज्जैन सिंहस्थ मेला से संबंधित 6-6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

-नरेन्द्र दीक्षित

जगत प्रवाह. नर्मदापुरम। आगामी सिंहस्थ मेला 2028 के सफल आयोजन हेतु पुलिस मुख्यालय के निर्देशानुसार जिले में उज्जैन सिंहस्थ से संबंधित 6-6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। जिसके अंतर्गत पुलिस अधीक्षक साई कृष्ण थोटा के निर्देशन, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अभिषेक राजन के कुशल मार्गदर्शन में दिनांक 06 जून 2026 को चिकित्सक दीपक चौहान एवं नर्मदा हॉस्पिटल के विशेषज्ञ टीम द्वारा, सूबेदार सूरज जमरा की उपस्थिति में पुलिस लाइन, वेलफेयर हाल में विभिन्न थाने के 60 अधिकारियों एवं कर्मचारियों को CPR ट्रेनिंग दी गई एवं सिंहस्थ 2028 में ड्यूटी के दौरान अपने स्वास्थ्य का ध्यान कैसे रखना, क्या अति आवश्यक सामग्री क्या रखना एवं अन्य स्वास्थ्य सबंधी प्रशिक्षण प्रदाय किया।

# भाजपा सरकार बंगाल में अब PMCSY को पूरी तरह से लागू करेगी

-अमित राय

जगत प्रवाह. कोलकाता। पीएम चा श्रमिक योजना को लागू करने तथा दार्जिलिंग हिल्स, तराई और डुआर्स इलाके में चाय इंडस्ट्री से जुड़े दूसरे जरूरी मुद्दों पर बात करने के लिए दार्जिलिंग से भाजपा सांसद राजू बिस्टा सहित सांसद, मंत्री और विधायक सभा में शामिल हुए। चाय उद्योग नॉर्थ बंगाल में सबसे ज्यादा रोजगार देने वाला सेक्टर बना हुआ है। फिर भी, पिछले 15 सालों में, तृणमूल कांग्रेस सरकार ने इसे बर्बाद कर दिया। करीब 30 चाय बागान बंद हो गए हैं और करीब सौ और बीमार हैं। यूनियन बजट 2021-22 में घोषणा की गई- पीएम चा श्रमिक योजना (पीएमसीएसवाई) का मकसद चाय बागानों में काम करने वालों की हेल्थ, एजुकेशन और भलाई को बेहतर बनाना है, जिसमें महिलाओं और बच्चों पर खास ध्यान दिया गया है। हालांकि यह पूरी तरह से सेंट्रल फंडेड थी, लेकिन पिछली सरकार (तृणमूल कांग्रेस) ने इसे नॉर्थ बंगाल में लागू करने से मना कर दिया था। मुख्यमंत्री सुवेंदु अधिकारी के नेतृत्व में, राज्य में

भारतीय जनता पार्टी सरकार अब पीएमसीएसवाई को पूरी तरह से लागू करेगी, काम करने वालों के मुद्दों को सुलझाने और उनकी भलाई पक्का करने के लिए एक्टिव रूप से काम करेगी, और चाय इंडस्ट्री को फिर से जिंदा करने के लिए ठोस कदम उठाएगी। तृणमूल कांग्रेस के राज में चाय बागान और सिनकोना बागानों में काम करने वालों का शोषण सबसे बुरा रहा है। पश्चिम बंगाल में ये सिर्फ दो सेक्टर हैं जहाँ टीएमसी ने मिनिमम वेज एक्ट या नए लेबर कोड्स को लागू करने से मना कर दिया है। सरकार ने नए लेबर कोड्स को जल्द से जल्द लागू करने के तरीकों पर काम करने के लिए एक कमेटी बनाई है, ताकि मजदूरों को अच्छी मजदूरी और बेहतर रहने और काम करने के हालात मिल सकें। इसके अलावा, श्रम विभाग, जो तृणमूल कांग्रेस के समय में सुस्त पड़ा हुआ था, को मजदूरों की चिंताओं, खासकर उनकी मजदूरी, पीएफ और दूसरे कानूनी अधिकारों की सुरक्षा से जुड़ी चिंताओं को सक्रिय रूप से दूर करने का काम सौंपा गया है। सभा में इस बात पर भी चर्चा की गयी कि टी बोर्ड दार्जिलिंग चाय को फिर से शुरू करने में तुरंत कैसे मदद कर सकता है। विदेश से चाय को "दार्जिलिंग चाय" के तौर पर बेचने और लेबल करने से रोकने के लिए जियोग्राफिकल इंडिकेशन (जीआई) प्रोटेक्शन और मैंडेटरी सर्टिफिकेट ऑफ़ ओरिजिन (सीओसी) को सख्ती से लागू करना जरूरी है। घरेलू चाय इंडस्ट्री की सुरक्षा के लिए टी (मार्केटिंग और डिस्ट्रीब्यूशन) कंट्रोल ऑर्डर और नई टी मार्क सर्टिफिकेशन स्कीम (24 मार्च 2026 को लॉन्च) को सख्ती से लागू किया जाना चाहिए। टी बोर्ड ऑफ़ इंडिया से टी डेवलपमेंट एंड प्रमोशन स्कीम (टीडीपीएस) लागू करने और हमारे दार्जिलिंग हिल्स, तराई और डुआर्स इलाके में चाय इंडस्ट्री के पूरे विकास में मदद करने के लिए अनुरोध किया गया है। साथ ही कहा गया कि हम चाय इंडस्ट्री को बचाने और अपने वर्कर्स का भविष्य सुरक्षित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। सभा में पश्चिम बंगाल सरकार में उत्तर बंगाल विकास मंत्री निसिथ प्रमाणिक, राज्यमंत्री विशाल लामा, सांसद मनोज तिग्गा (अलीपुरद्वार), डॉ. जयंत कुमार रॉय (जलपाईगुड़ी), कार्तिक चंद्र पॉल (रायगंज), डिप्टी चेयरमैन टी बोर्ड- सी. मुरुगन, क्षेत्र के विधायक, राज्य और केंद्र सरकार के वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए।

# मूलभूत सुविधाओं के लिए भटक रहे विस्थापित परिवार

-प्रमोद बरसले

जगत प्रवाह. टिमरनी। नगर में बन रहे ओवरब्रिज के कारण पोखरनी रोड पर रहने वाले 30 गरीब परिवारों को गत वर्ष प्रशासन द्वारा इनडोर स्टेडियम के पीछे खाली जगह पर विस्थापित कर मकान के लिए प्लाट आवंटित किए गए थे, जिसमें इन गरीब परिवारों ने अपने मकान तो बना लिए परंतु मूलभूत सुविधाओं से अभी तक वंचित हैं। नगर कांग्रेस अध्यक्ष सुभाष जायसवाल के नेतृत्व में विस्थापित महिलाएं मुख्य नगर पालिका अधिकारी से मिली तथा सड़क पानी बिजली

एवं निकासी के लिए नाली की मांग रखी। महिलाओं ने बताया कि हमें 1 वर्ष पूर्व ब्रिज निर्माण स्थल से हटकर यहां विस्थापित कर दिया गया है परंतु मूलभूत सुविधाओं के नाम पर सिर्फ आश्वासन दिए जा रहे हैं। सभी परिवार पानी एवं सड़क के अभाव में रह रहे हैं एवं बिजली की सुविधा भी नहीं दी जा रही है। परेशान नागरिकों ने कई बार आवेदन दिए परंतु उनकी समस्याओं का निराकरण नहीं हो सका है। नगर कांग्रेस अध्यक्ष सुभाष जायसवाल मुख्य नगर पालिका अधिकारी के समक्ष पीड़ित परिवारों का पक्ष रखा तथा उनसे स्थल निरीक्षण की भी मांग की जिस पर मुख्य नगर पालिका अधिकारी ने सहमति देते हुए तुरंत उसे स्थान का निरीक्षण किया जहां पर यह परिवार रह रहे हैं तथा उनकी समस्याओं को देखा एवं एक सप्ताह के अंदर सड़क नाली बिजली एवं पानी की समस्या के निराकरण का आश्वासन दिया। इस अवसर पर पूर्व पार्षद शहजाद खान सहित वार्ड की महिलाएं उपस्थिति रही।

## गाडरवारा का सरकारी अस्पताल या मनमर्जी का केंद्र?

-बद्रीप्रसाद कौरव

जगत प्रवाह. गाडरवारा। क्षेत्र के शासकीय अस्पताल में स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर एक बार फिर सवाल खड़े हो रहे हैं। लगातार सुर्खियों में रहने वाले इस अस्पताल में आए दिन ऐसी समस्याएं सामने आ रही हैं, जिनका खामियाजा मरीजों और उनके परिजनों को भुगतना पड़ रहा है। ताजा मामला नवजात शिशुओं के टीकाकरण से जुड़ा है। परिजनों का आरोप है कि अस्पताल में नवजात बच्चों को समय पर टीकाकरण नहीं किया जा रहा है। टीका लगवाने के लिए माता-पिता अपने नवजात शिशुओं को लेकर घंटों अस्पताल परिसर में इंतजार करने को मजबूर हैं। भीषण गर्मी के बीच छोटे बच्चों को लेकर लंबी कतारों में खड़े रहना उनके स्वास्थ्य के लिए भी चिंता का विषय बना हुआ है। उनका आरोप है कि अस्पताल प्रशासन को नवजात शिशुओं और उनके अभिभावकों की परेशानियों से कोई सरोकार नहीं दिखाई दे रहा है। परिजनों ने जिला प्रशासन एवं स्वास्थ्य विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों से मामले की जांच कर उचित व्यवस्था सुनिश्चित करने की मांग की है। साथ ही उन्होंने जिम्मेदार अधिकारियों एवं कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई की भी अपील की है, ताकि भविष्य में मरीजों को इस प्रकार की समस्याओं का सामना न करना पड़े।

# खेतों की बिगड़ी सेहत को सुधारने की जरूरत

देश में खेती की सबसे बड़ी समस्या अब खाद की कमी नहीं, बल्कि उसका अंधाधुंध और जरूरत से ज्यादा प्रयोग है। यूरिया के बहुतायत प्रयोग से खेतों की उपजाऊ मिट्टी की सेहत लगातार बिगड़ रही है। हालात इतने चिंताजनक हो चुके हैं, कि केंद्र सरकार को मिट्टी की सेहत सुधारने के लिए 'खेत बचाओ अभियान' आरंभ करना पड़ा है। कृषि वैज्ञानिकों के सैंकड़ों दल खेतों में जाकर किसानों को समझाएंगे कि अधिक रसायनिक खाद के उपयोग से फसल का उत्पादन उतना नहीं बढ़ा, जितना मिट्टी का स्वास्थ्य बिगड़ा है। खेत को बिगाड़ने की शुरूआत जैविक खाद से मुक्ति और रासायनिक खाद को सब्सिडी देने की शुरूआत के साथ ही हो गई थी, जो अब खेतों के अस्तित्व के लिए चुनौती बनकर पेश आई है।

प्रमोद भार्गव
वरिष्ठ पत्रकार

किसी भी वस्तु में सब्सिडी यानी छूट देखने-सुनने में अच्छी लगती है। लेकिन कृषि के लिए डीएपी खाद पर दी जा रही सब्सिडी खेत-पानी और राष्ट्र की सकल पूंजी को हानि पहुंचा रही है। दशकों से किसान को कृषि विभाग और वैज्ञानिक समझा रहे हैं कि नाइट्रोजन का अधिक प्रयोग खेत में न करें। इससे मिट्टी की उर्वरा क्षमता घटती है और फसल में पानी भी अधिक देना होता है। धान, गेहूं, कपास और गन्ना ऐसी फसलें हैं, जो यदि मिट्टी की उर्वरा क्षमता कम होती है तो पोषण के लिए ज्यादा पानी सोखती हैं। इसलिए किसानों को मोटा अनाज दालें व तिलहन पैदा करने और एनपीके खाद डालने को कहा जाता है। लेकिन इस बिंदु का विरोधाभासी पहलू है कि भारत सरकार यूरिया-डीएपी (नाइट्रोजन और फास्फोरस से बनी खाद) जैसी खादों पर भारी सब्सिडी देती है। नतीजतन मिश्रित एनपीके (नाइट्रोजन, फॉस्फेट एवं पोटाश से निर्मित खाद) खाद की जगह डीएपी खाद सस्ता पड़ता है। विडंबना है कि एनपीके पर सब्सिडी नहीं मिलने के कारण यह खाद महंगा मिलता है, जिससे किसानों ने इसे लगभग खारिज कर दिया है। इसलिए देखने में आ रहा है कि खेतों में नाइट्रोजन, फासफोरस एवं पोटास यानी एनपीके का अनुपात 4:2:1 होना चाहिए। लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर यह अनुपात 9:3:3:5 तक पहुंच गया है।

सरकार डीएपी पर सब्सिडी इसलिए दे रही है, जिससे उसे राजनीतिक हानि न उठानी पड़े। इसलिए सरकार ने यूरिया-डीएपी पर 2025-26 वित्तीय वर्ष में एक लाख, 86 हजार 630 करोड़ रुपए की प्रत्यक्ष सब्सिडी दी है। इस कारण चावल और गेहूं की खेती किसानों ने बड़ी मात्रा में की थी। ये फसलें ज्यादा मात्रा में पैदा होती हैं और इन्हीं का ज्यादा निर्यात होता है। किसान बहुफसलीय खेती करने से भी कतरा रहे हैं। इस वजह से देष को दलहन और तिलहन बड़ी मात्रा में आयात करने होते हैं। इनके आयात में बड़ी मात्रा में विदेशी पूंजी भी खर्च होती है। क्योंकि अधिकतर उर्वरक आयात करने होते हैं। पश्चिम एशिया में चल रहे युद्ध के चलते ये उर्वरक और महंगे हो गए हैं। यही नहीं गेहूं, चावल फसलों को पैदा करने में पानी के प्रबंधन और बिजली व्यवस्था में जो धन खर्च होता है, वह भी अप्रत्यक्ष निर्यात के जरिए नुकसान का सबब बन रहा है।

यह विडंबना ही है कि भारत में रोटी और रोजगार का सबसे बड़ा संसाधन बनी भूमि की गुणवत्ता अथवा उसकी बिगड़ती सेहत को जांचने का अब तक कोई राष्ट्र व्यापी पैमाना नहीं है। जबकि देश की कुल आबादी में से सत्तर प्रतिशत आबादी कृषि और प्राकृतिक संपदा से रोजी-रोटी जुटाती है। खेतों की उर्वरता और भूमि के क्षरण को लेकर टुकड़ों में तो आकलन आते रहते हैं, लेकिन इस स्थिति की वास्तविक हालत का खुलासा करने वाला कोई एक कभी मानचित्र देश की जनता के सामने पेश नहीं किया गया। हालांकि अशासकीय स्तर पर इस मांग की आपूर्ति अहमदाबाद की संस्था 'स्पेस एप्लिकेशन सेंटर' ने सत्रह अन्य इसी काम से जुड़ी एजेंसियों के साथ मिलकर की है। जमीन की सेहत से जुड़ा यह शोध बताता है कि आधुनिक व औद्योगिक विकास, जल व वायु प्रदूषण और कृषि भूमि में खाद व कीटनाशकों के बढ़ते चलन ने किस तरह से उपयोगी भूमि को रेगिस्तान में तब्दील करने का सिलसिला जारी रखा हुआ है। 'स्पेस एप्लिकेशन सेंटर' द्वारा किए शोध के मुताबिक राजस्थान का 21.77 प्रतिशत, जम्मू, कश्मीर एवं लद्दाख का 12.79 और गुजरात में 12.72 प्रतिशत क्षेत्र रेगिस्तान में बदल चुका है। मध्यप्रदेश में चंबल के बीहड़ पिछले 65 साल में 45 प्रतिशत बढ़े हैं। महाराष्ट्र में विदर्भ और उत्तरप्रदेश व मध्यप्रदेश में बुंदेलखण्ड क्षेत्र की कृषि का अनावृष्टि के कारण तेजी से क्षरण हो रहा है। वहीं भू-जल के बेतहाशा दोहन और अल्पवर्षा के चलते खेतों में दस सेंटीमीटर नीचे एक ऐसी कठोर परत बनती जा रही है, जो कालांतर में फसल की उत्पादन क्षमता को प्रभावित कर सकती है।

रेगिस्तान के विस्तार की तह में अतिवृष्टि और अनावृष्टि का चक्र तो है ही 1999 के बाद से मानसून की दगाबाजी ने उपजाऊ भूमि को बंजर भूमि में बदल देने का काम भी किया है। इन्हीं वजहों से देश के पश्चिमी और उत्तरी क्षेत्र भूमि क्षरण के प्रभाव में आए जंगलों का विनाश, चरनोई की भूमि को कृषि व आवासीय भूमि में तब्दील करना और एक तरह की फसल पैदा करने के बढ़ते चलन से खेतों एवं अन्य भूमि की सेहत बिगड़ी है। कुछ ऐसी ही वजहों के चलते बर्फीली वादियों से लेकर घने वनों वाले क्षेत्र भी फैलते रेगिस्तान की गिरफ्त में आ गए हैं।

जिस हरित क्रांति के बूते पंजाब को भारत का अनाज के अटूट भंडार का दर्जा हासिल हुआ था, वही पंजाब आज रासायनिक खादों का बेतहाशा उपयोग करने के कारण बड़ी तादात में अपनी कृषि भूमि बरबाद कर चुका है। देश के कुल कृषि क्षेत्र का 1.5 प्रतिशत भाग पंजाब के हिस्से में है। जबकि देश में कीटनाशकों की कुल खपत का 18 फीसदी उपयोग पंजाब के किसान करते हैं। इसी तरह पंजाब के मालवा क्षेत्र का कपास क्षेत्र पूरे पंजाब का केवल 15 फीसदी है, जबकि यहां पंजाब के कुल कीटनाशकों की खपत 70 फीसदी है। पंजाब के मालवा का क्षेत्र देश के कुल भू-भाग का मात्र 0.5 भाग है, जबकि यहां देश में कुल खपत होने वाले कीटनाशकों की 10 फीसदी खपत होती है। जिस भांखड़ा नांगल बांध को हम पंजाब की उन्नत खेती का आधार मानते हैं, इस बांध से जल रिसाब के चलते पंजाब की अब तक ढ़ाई लाख हेक्टेयर कृषि भूमि दलदल में बदल चुकी है। यही नहीं कीटनाशकों और रासायनिक उर्वरकों के बढ़ते इस्तेमाल ने यहां कैंसर की बीमारी को बड़ी आबादी में परोस दिया है।

कृषि के आधुनिकीकरण व यांत्रिकीकरण ने भी भूमि की सेहत को बिगाड़ने का काम किया है। इस बाबत ग्वालियर चंबल क्षेत्र में किए गए एक शोध के मुताबिक इस अंचल की भूमि में दो तरह के विकार पैदा हुए हैं। एक कृषि भूमि की सतह में दस सेंटीमीटर नीचे एक कठोर परत (हार्ड-लेयर) बन गई है। दूसरे, भू-गर्भ में करीब एक सौ मीटर की गहराई पर पानी से भरी रहने वाली जगह (पोर-स्पेस) रिक्त पड़ी है। क्षेत्रीय पर्यावरण में आए ये परिवर्तन भू-गर्भीय अथवा सतह पर भूकंप जैसी हलचल की वजह भी बन सकते हैं। डिस्कवरी चैनल द्वारा इस क्षेत्र में किए गए एक अध्ययन के प्रस्तुतीकरण ने भी दावा किया है कि चंबल व ग्वालियर अंचल में तेजी से रेगिस्तान का विस्तार हो रहा है।

इस अध्ययन से जुड़े वैज्ञानिकों का कहना है कि ऐसा परंपरागत खेती को नकारने से हुआ। पहले हलों से खेतों की जुताई होती थी लेकिन अब हैरो, कल्टीवेटर और प्लाऊ जैसे उपकरणों से हो रही है। ये जमीन को आठ से बारह सेंटीमीटर तक गहरा जोत कर भूमि की ऊपरी परत को उधेड़ कर पलट देते हैं। नतीजतन मिट्टी सूख कर शुष्क होती जा रही है और वहीं इसके नीचे की परत कठोर। यह परत अब इतनी कठोर हो गई है कि खेतों की मिट्टी का आनुपातिक कुदरती जैविक समीकरण ही गड़बड़ा गया है।

जमीन की सेहत अब प्राकृतिक कारणों की तुलना में मानव उत्सर्जित कारणों से ज्यादा बिगड़ रही है। पहले भूमि का उपयोग रहवास और कृषि कार्यों के लिए होता था, लेकिन अब औद्योगीकरण, शहरीकरण, बड़े बांध और बढ़ती आबादी के दबाव भी भूमि को संकट में डाल रहे हैं। जमीन का खनन करके जहां उसे छलनी बनाया जा रहा है, वहीं जंगलों का विनाश करके जमीन को बंजर बनाए जाने का सिलसिला जारी है। जमीन की सतह पर ज्यादा फसल उपजाने का दबाव है तो भू-गर्भ से जल, तेल व गैसों के अंधाधुंध दोहन के हालात भी भूमि पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं। पंजाब और हरियाणा में सिंचाई के जो नलकूप जैसे आधुनिक संसाधन हरित क्रांति के उपाय साबित हुए थे, वही उपाय खेतों में पानी ज्यादा मात्रा में छोड़े जाने के कारण कृषि भूमि को क्षारीय भूमि में बदलने के कारक सिद्ध हो रहे हैं। दरअसल अलग-अलग क्षेत्रों में भूमि की सेहत अलग-अलग कारणों से प्रभावित हो रही है, जिसकी देशव्यापी पड़ताल अब तक नहीं हुई है। धरती की बिगड़ती इस सेहत को मानचित्र पर लाना जरुरी है।

# पानी बचाओः जिम्मेदारी हमारी, भरोसा आने वाली पीढ़ी का

पर्यावरण की फिक्र

डॉ. प्रशांत सिन्हा
पर्यावरणविद

पानी हमारी जिंदगी की मूल आधारशिला है, इसकी एक-एक बूँद में जीवन के अनगिनत रूप बसते हैं। जब हम नल खोले रखते हैं या अनावश्यक बहाव को अनदेखा करते हैं, तब केवल पानी ही नहीं, भविष्य भी बर्बाद होता है। आज के छोटे-छोटे फैसले कल की पीढ़ियों के लिए बड़े परिणाम तय करेंगे। गर्मियां शुरु हो चुकी है। पेयजल की किल्लत भी इसके साथ शुरु हो जाती है। हालांकि पेयजल की किल्लत तो सालों भर रहता है। जल एक ऐसा तत्व है जिसके बिना जिंदगी की कल्पना भी नहीं की जा सकती। पानी की महत्ता उस प्यासे गले से पूछिए जिसे एक एक बूंद अमृत सरीखी लगती है। कोई भी तरल जल का विकल्प नही बन सका है।

से प्रारंभ होकर जल में लीन हो जाने वाले हमारे इस शरीर में लगभग 70 प्रतिशत जल है। इसी पानी के कारण हमारी धरती दूसरे ग्रहों से भिन्न है। धरती पर इंसानियत तभी पनपी क्योंकि वहां अमृत सरीखा पानी प्रचुर मात्रा में था। तो सारा पानी गया कहां ? हम इंसान की नासमझी के कारण जल संपदा दिनोंदिन न सिर्फ कम होता जा रहा है, बल्कि प्रदुषित होता जा रहा है। इस संपदा पर आज संकट के बादल मंडरा रहे हैं। चूकि जल पर जीवन निर्भर है इसलिए यह कह सकते हैं कि इसके साथ हमारा जीवन भी संकटग्रस्त होता जा रहा है। यह खतरा दिन प्रतिदिन गहराता जा रहा है। इसकी गंभीरता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी "मन की बात" कार्यक्रम में जिक्र करने से लगता है जिसमें उन्होंने जल संरक्षण को एक जन आंदोलन बनाने का सुझाव दिया था। देश में गहराते संकट को देखते हुए मोदी सरकार ने "जल शक्ति मंत्रालय" का गठन किया। एशियाई विकास बैंक के अनुसार भारत में 2030 तक 50 प्रतिशत पानी की कमी होगी। एक आंकड़े के अनुसार दुनिया में 2.2 अरब लोगों को पीने का पानी नहीं मिल रहा है।

भारत में जल प्रबंधन की करीब एक सदी से टिकाऊ राह नही रही है। 1970 तक यहां की जनसंख्या 5.5 करोड़ थी, तब इसका प्रबंधन किया जा सकता था। उस वक्त शहरीकरण एवं औद्योगिकरण कम हुआ था। 2022 भारत की आबादी एक अरब 50 करोड़ के लगभग पहुंच गई। बढ़ती जनसंख्या और शहरीकरण ने जल श्रोतों के अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया है। इसका सीधा असर भूजल स्तर पर पड़ रहा है क्योंकि भूजल स्तर को बढ़ाने में प्राकृतिक जल श्रोत ही सबसे बेहतर माध्यम है। लेकिन शहरीकरण होने से तालाबों को खत्म कर दिया गया है। लेकिन हमें यह समझना होगा कि बेहतर कल के लिए जल संग्रहण बहुत जरूरी है। सभी भवनों में सख्ती से वर्षा जल संग्रहण प्रणाली की व्यवस्था और वर्तमान समय में मौजूद जलाशयों का जीर्णोधार किया जाए तो शहरों में धरा जल से भर उठेगी। नए जलाशयों को विकसित करके एवं मौजूद जलाशयों को पुनर्जीवित कर दिया जाए तो कुछ हद तक पानी की समस्या को समाप्त की जा सकती है। भवनों में वर्षा जल संग्रहण प्रणाली लगाने का प्रावधान करना और नियम को सख्ती से लागू करने की जरूरत है। सिर्फ फाइलों में नही रहे इसका ध्यान रखना होगा। तमाम छोटे बड़े शहरों में सीवरेज के पानी को देशी ढंग से ट्रीट कर खेती के उपयोग में लाकर बहुत बड़े स्तर पर पानी की बचत किया जा सकता है। सीवरेज के ट्रीट किए पानी को खेतों की सिंचाई के लिए इस्तेमाल करने से फसलों में अतिरिक्त खाद डालने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी। साथ ही धरती के नीचे में ट्यूबवेल के जरिए पानी निकालने के लिए खर्च किए जाने वाली बिजली व डीजल की भी बचत होगी। ट्रीट किए पानी खेती के लिए अमृत की तरह है और कुदरती खेती होने से इंसान बीमारियों से भी बचेगा। पानी को दोबारा उपयोग किए जाने से साफ पानी का खजाना हमारे पास सुरक्षित रह सकेगा। फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य में सबसे महंगी बिकने वाली लेकिन अधिक पानी सोखने वाली फसलों जैसे धान, गेहूं, कपास, गन्ना आदि की खेती करने वाले किसानों को हतोत्साहित करने की जरूरत है। जिन राज्यों में इनकी खेती हो रही है वहां भूजल का स्तर इतना नीचे चला गया है कि नलकूपों से पानी निकालना मुश्किल हो गया है। मगर यह भी सुनिश्चित करना होगा कि विकल्प में किसान जिन कम पानी लेने वाली फसल उगाएं उनका न्यूनतम समर्थन मूल्य किसानों के हक में हो ताकि उन फसलों को उगाने के लिए प्रोत्साहन मिल सके। शीतल पेय बनाने वाली कंपनियों के भूजल दोहन से भी जल संकट गहराने की खबर है जिसे अविलंब रोकना होगा।

सरकारी मदद से नदियों को साफ करना मुश्किल काम नहीं है। देश भर में कार सेवा द्वारा अभियान चलाए जा सकते हैं। नदियों के अलावा तालाबों, छोटी झीलों का भी संरक्षण होना चाहिए। इससे मिट्टी की गाद निकलेगी। इससे उनमें वर्षा जल इकट्ठा होने लगेगा तो भूजल रिचार्ज होने लगेगा। बरसात का पानी की बर्बादी रुकेगी और और बाढ़ नही आएगी। इस पानी को जमा कर फिर से उपयोग में लाया जा सकेगा। इजरायल और सिंगापुर जैसे देश से हम इस बाबत बहुत कुछ सीख सकते हैं। इजरायल और सिंगापुर के लोगों ने वर्षा जल संचय के साथ पानी का बेहतर इस्तेमाल कर जल संकट से छुटकारा पा लिया है। हर नागरिक को जागरूक करना होगा कि हमें पानी को हर कीमत पर सहेजना है। अंततः पानी बचाने का अर्थ केवल संसाधन बचाना नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के साथ हमारा वादा निभाना है। हमारी छोटी-छोटी आदतों का असर दीर्घकालिक होता है। आज की बचत कल की सुरक्षा बन सकती है।

# हम बच्चों को सिर्फ व्यस्त कर रहे हैं या सफल भी बना रहे हैं?

आज की बात

प्रवीण कक्कड़
स्वतंत्र लेखक

गर्मियों की तपती दोपहरों के बीच इन दिनों घरों में एक अजीब सी हलचल दिखाई देती है। कैलेंडर कहता है कि बच्चों की गर्मी की छुट्टियां चल रही हैं, लेकिन बच्चों के चेहरे और उनकी दिनचर्या कुछ और ही कहानी बयां कर रही है। एक समय था जब यही छुट्टियां नानी के घर की मस्ती, आम के बागों की खुशबू, धूल भरे मैदानों में खेल, रिश्तों की गर्माहट और जीवन के सहज पाठ सीखने का अवसर होती थीं। आज जब मैं अपने आसपास के बच्चों को देखता हूं तो लगता है कि उनके पास पहले से कहीं अधिक सुविधाएं और अवसर हैं, लेकिन समय, स्वतंत्रता और बचपन लगातार कम होता जा रहा है। सवाल यह है कि क्या हम बच्चों को जीवन के लिए तैयार कर रहे हैं या सिर्फ उपलब्धियों की दौड़ के लिए? आज की छुट्टियां परिवार, संस्कार और अनुभवों की खुली पाठशाला बनने के बजाय समर कैंप, कोडिंग, रोबोटिक्स, स्विमिंग, ट्यूशन और पर्सनैलिटी डेवलपमेंट के अंतहीन टाइम-टेबल में सिमटती जा रही हैं। आठ-दस साल का बच्चा सुबह से शाम तक एक क्लास से दूसरी क्लास के बीच दौड़ रहा है, मानो वह किसी भविष्य की कॉर्पोरेट परियोजना की तैयारी कर रहा हो। नतीजा यह है कि रिपोर्ट कार्ड, रैंक और प्रमाणपत्र तो बढ़ रहे हैं, लेकिन रिश्तों की समझ, जीवन कौशल, जिम्मेदारी, रचनात्मकता और मानसिक संतुलन पीछे छूटते जा रहे हैं। सर्वांगीण विकास आवश्यक है, लेकिन उसकी कीमत बचपन नहीं हो सकती।

हमने विकास की परिभाषा को इतना संकुचित कर दिया है कि बच्चा हर समय पढ़ाई, प्रतियोगी तैयारी और नई-नई स्किल्स सीखने में लगा रहता है। यदि किसी बच्चे का पूरा दिन वयस्कों की तरह कैलेंडर और टाइम-टेबल से संचालित होने लगे, तो फिर बचपन और नौकरी के बीच अंतर क्या रह जाएगा? पहले बचपन गिरने, संभलने और दुनिया को अपने तरीके से खोजने का नाम था; आज यह टेस्ट, प्रदर्शन और उपलब्धियों के दबाव का बंधक बन गया है। खेल के मैदान धीरे-धीरे कंक्रीट की क्लासों में बदल रहे हैं, जहाँ हर मासूम कदम सिर्फ जीतने के लिए दौड़ रहा है।

## रिपोर्ट कार्ड का पिंजरा और तुलना

हमारी सामाजिक व्यवस्था ने बच्चे के विशाल व्यक्तित्व को चंद अंकों, प्रतिशत और रैंक के एक छोटे से पिंजरे में कैद कर दिया है। 95 प्रतिशत अंक लाने वाला बच्चा सफल मान लिया जाता है, लेकिन बस्ते के बोझ तले दबी उसकी मुस्कान को गिनने की फुर्सत शायद ही किसी के पास है। एनसीईआरटी के एक सर्वेक्षण के अनुसार लगभग 81 प्रतिशत छात्र परीक्षा और परिणामों से जुड़ी चिंता और तनाव का सामना करते हैं। यह केवल एक आंकड़ा नहीं, बल्कि एक सामाजिक चेतावनी है। विडंबना यह है कि कई बार बच्चे अपने सपनों से नहीं, बल्कि माता-पिता की अधूरी महत्वाकांक्षाओं से संचालित होते हैं। "जो मैं नहीं बन सका, वह मेरा बेटा बनेगा" जैसी सोच प्रेम से अधिक दबाव पैदा करती है। ऊपर से "शर्मा जी के बेटे को देखो" जैसी तुलना बच्चों के आत्मविश्वास को भीतर ही भीतर कमजोर करती है। तुलना प्रेरणा कम और असुरक्षा अधिक पैदा करती है। हर बच्चा अलग है, उसकी क्षमता, गति और सपना अलग हो सकता है। हाल ही में मैंने अपने ही परिवार में इसका एक उदाहरण देखा। मेरी बेटी ध्रुवी अपनी छह साल की बेटी अन्वी को कई एक्स्ट्रा करिकुलर क्लासेस में भेज रही थी। मैंने उससे सहजता से कहा कि बच्चों पर इतनी छोटी उम्र में इतना दबाव डालना शायद ठीक नहीं है। इस पर उसने तुरंत जवाब दिया, "अरे पापा, मेरे फ्रेंड्स के बच्चों को देखिए, वे कितनी-कितनी क्लासेस में जाते हैं। अन्वी की उम्र के बच्चे डांस, स्विमिंग, म्यूजिक, एबेकस और न जाने क्या-क्या सीख रहे हैं।" उसकी बात सुनकर मुझे लगा कि समस्या बच्चों की नहीं, हमारी सोच की है। हम अपने बच्चों को उनकी रुचि और क्षमता से कम, और अपने फ्रेंड्स के बच्चों से ज्यादा तौलने लगे हैं। यही तुलना धीरे-धीरे बचपन को एक प्रतियोगिता में बदल देती है। आज बच्चे की दुनिया या तो मोबाइल स्क्रीन की आभासी चमक में कैद है या किसी सख्त शेड्यूल के साइलेंट जोन में। खाली बैठकर आसमान को निहारना, बारिश की बूंदों को महसूस करना और दोस्तों के साथ बिना वजह ठहाके लगाना दुर्लभ होता जा रहा है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन और लैंसेट की रिपोर्टें बताती हैं कि किशोरों में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियां लगातार बढ़ रही हैं। भारत में भी लगभग 10 से 12 प्रतिशत किशोर किसी न किसी मानसिक स्वास्थ्य समस्या का सामना कर रहे हैं। स्क्रीन की कृत्रिम रोशनी ने बच्चों से आसमान के तारों को देखने का कौतूहल और सुकून दोनों छीन लिया है।

## भविष्य के लिए क्या है जरूरी?

सबसे बड़ी चिंता यह है कि हम बच्चों को सफलता का जश्न मनाना तो सिखा रहे हैं, लेकिन असफलता को स्वीकारना और उससे सीखना नहीं। जबकि जीवन में आगे बढ़ने के लिए हर बार जीतना नहीं, बल्कि हारकर फिर उठ खड़ा होना अधिक महत्वपूर्ण है। यदि हमें वास्तव में एक मजबूत, संस्कारी और जिम्मेदार पीढ़ी का निर्माण करना है, तो हमें अपनी सोच बदलनी होगी। अपने आप से पूछिये।

# रेल विकास को मिल रही डबल इंजन की रफ्तार

श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

## ₹ रेल बजट

**₹6,900 करोड़** (2025-26)

**10 वर्षों 22 गुना की वृद्धि**

R.O. No. : 13795/ 2

छत्तीसगढ़ जनसंपर्क | Visit us : /ChhattisgarhCMO /DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in


स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक विजया पाठक द्वारा जेयन आफसेट वर्क्स, पुल बोगदा भोपाल 462023 (मप्र) से मुद्रित तथा एफ-116/17, शिवाजी नगर, भोपाल (मप्र) से प्रकाशित। **संपादक : विजया पाठक।**
***RNI-MPBIL/2011/39805*** समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार। (सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल रहेगा।)